9-5-17

दृष्टि The Vision

निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-**E4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address): ____

टेस्ट नं. एव दिनांक (Test No. & Date): ____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]: ____

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

73

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू०सी०ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहियें।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा गया कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबंध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो: 125×2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2 = 250

खण्ड–A / SECTION –A

1. यदि धन दूसरों की भलाई के लिये प्रयुक्त होता है तो इसका कोई मूल्य है, अगर नहीं, तो यह केवल बुराइयों का ढेर है तथा इससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाए उतना बेहतर है।
   If money help a man to do good to others, it is of some value; but if not, it is simply a mass of evil, and the sooner it is got rid of, the better.
2. दोहरा तुलन पत्र संलक्षण।
   Twin Balance Sheet Syndrome.
3. जलवायु परिवर्तन: प्रत्येक कदम आगे की ओर नहीं है।
   Climate Change: Every step is not a forward step.
4. प्रतीक्षा न करें, समुचित समय कभी नहीं आएगा।
   Do not wait, the time will never be just right.

प्रतीक्षा न करें, समुचित समय कभी नहीं आएगा

यदि किसी व्यक्ति को निश्चित प्राप्त करनी आवश्यकता है, तो उसे प्रतीक्षा करने के बजाय निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। मानव सभ्यता के उदय से मानव निरंतर प्रयत्न करते हुए विकास की ओर अग्रसरित हुआ है। यदि मानव प्रयत्न न करता और हुए समुचित समय आने की प्रतीक्षा करता रहता, तो संभवत: आज विश्व 21 वीं सदी में मानव

परिचय सुधार की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो रहा है, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। हमारे पूर्वज निरंतर प्रयत्न करते रहे, उन्हीं का परिणाम है कि 'आग एवं पहिए' के आविष्कार से प्रारंभ हुई प्रगति की धारा में निरंतर प्रवाहित हो रही है।

वस्तुतः यदि मनुष्य प्रतीक्षा करता रहे, तो वह समुचित समय कभी नहीं आता, जो उसे सफल होने में सहायक हो सके क्योंकि समय निरंतर चलायमान होता है, वह स्थिर कभी नहीं रहता। जब तक मनुष्य अपने लिए अनुकूल स्थिति की प्रतीक्षा करे, तब तक संभव है कि परिस्थितियाँ और भी जटिल रुप ले लें।

वस्तुतः मनुष्य के संदर्भ में कहा जाता है कि मनुष्य केवल परिस्थितियों के अनुसार परिचालित नहीं होता, बल्कि वह परिस्थितियों का निर्माण भी करता है। यदि विज्ञान-तकनीक के क्षेत्र की बात

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करें, तो भारत की अग्रणी संस्थान ISRO ने साइकिल पर ले जाकर प्रथम रॉकेट का प्रमोचन किया था, किंतु वर्तमान में वह GSLV जैसी तकनीक से भी समृद्ध है। इसी प्रकार बिल गेट्स ने यदि अनुकूल समय आने की प्रतीक्षा करता रहता, तो संभवतः वह माइक्रोसॉफ्ट कंपनी की स्थापना कभी नहीं कर सकता।

वास्तव में समुचित समय कभी नहीं आता, बल्कि मनुष्य को स्वयं ही समुचित समय का सृजन करना होता है। यदि मनुष्य समुचित समय के सृजन के लिए प्रयत्नशील न हो, तो संभावना है कि वह समुचित समय कभी भी न आए, जब वह सफलता प्राप्त कर सके। यदि हम ऐतिहासिक काल में देखें, तो कौटिल्य ने नन्द वंश को समाप्त करने के लिए समुचित समय की प्रतीक्षा नहीं की बल्कि समुचित समय का स्वयं सृजन किया। उसने इस प्रयोजन हेतु चन्द्रगुप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मौर्य जैसे ~~शासक~~ योग्य व्यक्ति का चयन किया, तो वहीं उसने अपनी योग्यता से एक सशक्त सेना का निर्माण किया।

ऐसे भी अनेक दृष्टांत हमें प्रत्येक क्षेत्र में देखने को प्राप्त हो जाएंगे। चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो राजनीतिक हो या और कोई क्षेत्र। भारत ने यदि आर्थिक प्रगति की है, तो उसने इस प्रगति के लिए समय का इंतजार नहीं किया बल्कि स्वयं ही उन परिस्थितियों का निर्माण किया कि आज भारत को आर्थिक रूप से सशक्त राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया गया है।

किंतु इस अवधारणा का एक दूसरा पक्ष भी है। भारतीय संस्कृति में एक उक्ति ~~प्र~~ प्रचलित है 'इन्तजार का फल मीठा होता है।' ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति को किसी भी कार्य को शीघ्रता से करने से बचना चाहिए, क्योंकि इससे कार्य के बिगड़ने की संभावना बनी रहती

विचारों की महत्वपूर्ण पर प्रभाव होता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। ऐसे में व्यक्ति को समुचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए और तत्पश्चात निर्णय लेना चाहिए।

इस संबंध फ्रांस के नेपोलियन का उदाहरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1879 के पश्चात फ्रांसीसी क्रांति के फलस्वरूप ऐसी स्थिति बन गई थी कि नेपोलियन किसी भी समय सत्ता प्राप्त कर सकता था, किंतु उसने डायरेक्टरी के शासन में तभी सत्ता प्राप्त की, जब फ्रांस की जनता स्वयं ही नेपोलियन को एक शासक के रूप में स्वीकार करने को आतुर हो गई। इसका परिणाम हुआ कि उसे न केवल अधिक जनसमर्थन प्राप्त हुआ, बल्कि वह अपनी नीतियों को भी अधिक प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने में सफल रहा।

ऐसी ही स्थिति भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में देखी जाती है। गांधी जी ने असहयोग आंदोलन के ~~इस~~ पश्चात दस वर्ष तक कोई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बड़ा आंदोलन प्रारंभ नहीं किया, क्योंकि वह एक ऐसे समय की प्रतीक्षा करते रहे, जब भारत का आम जन अधिक सक्रियता के साथ ब्रिटिश विरोधी आंदोलन में भाग ले सके। जब उन्होंने 1930 में ब्रिटिश के विरुद्ध आंदोलन करने के लिए समुचित समय प्रतीत हुआ, उन्होंने 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' प्रारंभ कर दिया।

भाषा सुधारें

वस्तुतः प्रतीक्षा करने से व्यक्ति में परिपक्वता का विकास होता है, और ऐसी स्थिति में जब वह अपने किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है, तो उसकी सफलता अधिक सुनिश्चित प्रतीत होती है।

परंतु यहाँ मूलभूत प्रश्न है यह है कि क्या किसी व्यक्ति की सफलता मात्र उसके 'समुचित समय की प्रतीक्षा' के आधार पर निर्धारित की जा सकती है। वास्तव में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यदि व्यक्ति केवल ~~प्रतीक्षा~~ समुचित समय के लिए प्रयत्न करता रहे और उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न न करे, तो वह कभी भी सफल नहीं हो सकता है। सत्य तो यह है कि समुचित समय भी उन्हीं व्यक्ति का आता है, जो उसके लिए प्रयत्न करते हैं।

इस स्थिति को ~~इसको~~ एक हम उदाहरण के माध्यम से देखा जा सकता है। भारत ने ओलंपिक खेलों में 50 स्वर्ण पदक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। किंतु यदि सरकार केवल इस बात की प्रतीक्षा करती रहे कि समुचित समय आने पर स्वतः भारत 50 पदक प्राप्त कर लेगा तो संभवतः ~~ऐसी~~ ऐसा समय कभी न आए। किंतु यदि सरकार एवं खिलाड़ी निरंतर प्रयास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करते रहें, तो संभव है कि वे आगामी ओलंपिक में ही भारत को स्वर्ण पदक जीतने में सफल हों।

दरअसल यह कहना है कि समुचित समय आने पर सफलता स्वयं प्राप्त हो जाएगी, मनुष्य को भाग्यवादी बनाना ही है। मनुष्य को बिना प्रतीक्षा किए ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उन्मुख होना चाहिए। अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन पहले कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता है था, कि अमेरिका एक दिन विश्व की महाशक्ति बनेगा किंतु उसने समुचित समय की प्रतीक्षा का न कर 'कर्म' को महत्ता प्रदान की और उसी का परिणाम है कि आज अमेरिका विश्व की महाशक्ति है।

भारत के संदर्भ में भी ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं, जहाँ व्यक्तियों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ने समुचित समय हेतु प्रतीक्षा नहीं की, बल्कि निरंतर प्रयत्न करते हुए सफल हुए। धीरूभाई अंबानी, डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। डॉ० कलाम जब एम० डी० ए० की परीक्षा में असफल हुए, तो उन्होंने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और निरंतर प्रयत्न करते हुए DRDO जैसी प्रतिष्ठित संस्थान में वैज्ञानिक के रूप पर में नियुक्त हुए। इसके पश्चात वह निरंतर सफलता प्राप्त करते हुए भारत के राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए।

उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात कहा जा सकता है कि व्यक्ति केवल प्रतीक्षा करता रहे और अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न न करे वह समुचित समय कभी नहीं आएगा, जब वह सफलता प्राप्त कर सके। वास्तव में समुचित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समय भी तभी आता है, जब व्यक्ति अपनी सफलता हेतु प्रयत्न करता है। अतः मानव सभ्यता की प्रगति हेतु आवश्यक है कि मानव समुचित समय की प्रतीक्षा न करे, बल्कि समुचित समय के निर्माण का प्रयत्न करे, जिसमें उसकी सफलता प्राप्त हो सके। यदि मानव निरंतर परिस्थिति एवं समय को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता है, तो ~~यह~~ मानव सभ्यता निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर बनी रहेगी।

35

विषय-वस्तु का मर्म शब्दों से अधिक से अधिक समर्थन तथा आयामों को उत्तर में शामिल करने का प्रयास करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. सार्वलौकिक आधार आय की परिकल्पना, गांधी जी के बिना कार्य के धन अर्जन के विचार का विरोधाभास है।
   The concept of Universal Basic Income (UBI), contradicts the views of Gandhi ji about wealth without work.
2. युद्ध से बचने के लिये क्या बेहतर है: आक्रामकता या शांति?
   What is better to avoid war: Aggressiveness or peace?
3. ऊर्जा सुरक्षा के लिये भारत को संसाधनों के साथ-साथ स्रोतों में भी विविधता लाने की आवश्यकता है।
   For Energy Security India needs to diversify resources as well as sources.
4. बुजुर्गों का हाथ थामना: अभी या कभी नहीं।
   Hand holding the elderly: Now or Never.

सार्वलौकिक आधार आय की ~~परि~~ परिकल्पना, गांधी जी के बिना कार्य के धन अर्जन के विचार का विरोधाभास है

महात्मा गांधी ने मानव कल्याण सुनिश्चित करने हेतु 'सात पाप' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इन सात पापों में से एक 'बिना कार्य के धन अर्जन' भी था। गांधी जी का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को ~~आय~~ धन उसी स्थिति में प्राप्त होना चाहिए, जब वह किसी उत्पादक कार्य में संलग्न हो। यदि कोई व्यक्ति बिना किसी कार्य को किए, धन प्राप्त कर रहा है, तो यह पाप के समान है। किंतु अभी हाल ही में भारत में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'सार्वलौकिक आधार आय' प्रदान करने को लेकर ~~वस्त~~ विद्वानों में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गई। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को 'सार्वलौकिक आधार आय' प्रदान की जानी चाहिए। तो वहीं विद्वानों के दूसरे वर्ग का मानना है कि यह गांधी जी के सिद्धांत के विरुद्ध है, और इसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। सार्वभौमिक आधार आय की परिकल्पना को लेकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व यह आवश्यक है कि कुछ प्रश्नों जैसे - सार्वभौमिक आधार आय क्या है? इससे क्या लाभ है? इससे क्या हानि होगी? इत्यादि पर विचार किया जाए।

'सार्वभौमिक आधार आय' से तात्पर्य होता है कि "देश के प्रत्येक नागरिक को उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक निश्चित मासिक आय सरकार द्वारा प्रदत्त की जाए, भले ही वह किसी आर्थिक गतिविधि में संलग्न हो या न हो।"

वस्तुतः 'सार्वभौमिक आधार आय' को लेकर विद्वानों का मानना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है कि इससे अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है। मानव सभ्यता के उदय से ही मानव को कभी भी बिना कर्म के किसी फल की प्राप्ति नहीं हुई। प्राचीन काल में जब आखेटक समाज विद्यमान है, तब भी मानव जब पशुओं के आखेट का श्रम करता था, तभी उसे भोजन की प्राप्ति होती थी। ऐसा ही क्रमिक रूप से पशुपालन और कृषक अर्थव्यवस्था में देखा गया और वर्तमान के औद्योगिक युग में तो यह सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण है। यदि वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति को सार्वभौमिक न्यूनतम आय प्रदान की गई, तो ऐसे में संभावना है कि ~~भी~~ प्रत्येक व्यक्ति कोई करने की चेष्ठा ही न करे, क्योंकि उसे इस बात का बोध होगा कि उसकी मूलभूत आवश्यताएँ पूरी हो जाएगी। जिसका परिणाम होता है कि मानव सभ्यता का विकास अवरुद्ध होने की संभावना बनी रहेगी। मानव को जो निरंतर आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी इत्यादि क्षेत्रों में विकास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर रहा है, वह अवरुद्ध होगा।

इसी प्रकार यदि बिना उत्पादन किए व्यक्ति को धन दिया गया, तो इससे संभावना रहेगी कि देश की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। ऐसी स्थिति में न केवल उत्पादन में गिरावट दर्ज की जाएगी, बल्कि वस्तुओं की कमी एवं प्रत्येक व्यक्ति के पास धन होने से मुद्रास्फीति की भी समस्या उत्पन्न होगी, जिसका परिणाम होगा कि 'सार्वभौमिक आधार आय' की परिकल्पना ध्वस्त हो जाएगी।

इतना ही नहीं सार्वभौमिक आधार आय का निर्धारण करना कठिन है। यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें, तो संपूर्ण भारत के लिए एक समान आधार आय निश्चित नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए भारत के किसी ग्रामीण क्षेत्र के लिए जो न्यूनतम आय होगी, क्या वही न्यूनतम आय मुंबई में निवास करने वाले

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागरिक को भी प्रदान की जाएगी? ऐसी स्थिति में दोनों स्थान पर यदि समान आय प्रदान की गई, तो सार्वभौमिक आय से कोई भी लाभ प्राप्त नहीं होगा। क्योंकि दोनों स्थानों पर निवास करने वाले व्यक्तियों की आवश्यकताएँ भिन्न होंगी, ~~उनकी~~ वस्तुओं की कीमतों में भिन्नता होगी इत्यादि।

इसके अतिरिक्त भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र के लिए सार्वभौमिक न्यूनतम आय प्रदान करना चुनौतीपूर्ण है। भारत में लगभग 30% (23%) जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही है। ऐसे में यदि भारत के लिए ये चुनौती यह है कि सार्वभौमिक न्यूनतम लाभ केवल गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों को प्रदान की जाएगी या भारत के प्रत्येक नागरिक। इतनी बड़ी जनसंख्या को सार्वभौमिक न्यूनतम आय प्रदान करने के लिए बड़े पैमाने पर संसाधनों का व्यय करने होगा। इस स्थिति में संभावना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में है कि सरकार अन्य गतिविधियों जैसे - सुरक्षा पर खर्च, विदेशी राष्ट्रों को अनुदान इत्यादि में कटौती करेगा, जिससे भारत में आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा संबंधी चुनौतियां उत्पन्न हो सकती है। सरकार न्यूनतम आय प्रदान करने के लिए यदि नागरिकों के ऊपर 'कर बोझ' बढ़ाती है, तो यह भी किसी लोकतांत्रिक देश के लिए उचित नहीं माना जा सकता।

तो साथ ही ~~यदि~~ यदि न्यूनतम आय प्रदान कर भी दी गई तो, इसकी क्या संभावना है कि परिवार उस आय का व्यय अपने मूलभूत आवश्यकताओं मसलन - स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्य इत्यादि, पर करे। यह भी संभावना हो सकती है कि परिवार का मुखिया उस राशि का व्यय मद्यपान, जुआ, सट्टेबाजी ~~व~~ जैसे कार्यों में करे। ऐसी स्थिति में इसका सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव बच्चों एवं महिलाओं पर पड़ेगा। न्यूनतम आय अपने वास्तविक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उद्देश्यों की प्राप्ति में असफल होगा।

उपरोक्त विवेचन करने से पश्चात एकबारगी यह प्रतीत हो सकता है कि ~~यह~~ सार्वभौमिक न्यूनतम आय वास्तव में जनकल्याण नहीं बल्कि जनहानि का एक साधन है ~~और~~ यह गांधी जी के सिद्धांत के विरुद्ध ~~होगी~~ है। किंतु यह निष्कर्ष निकालना किसी विषय के दूसरे पक्ष को नजरअंदाज करने के समान है। दूसरे पक्ष का मानना है कि 'न्यूनतम आय' वास्तव में गांधी जी के सिद्धांत के अनुकूल है और इसके माध्यम से ही देश का विकास संभव है।

गांधी जी का मानना था संसाधनों का 'उचित वितरण' होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की ~~मूलभूत~~ मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। वस्तुतः यदि हमें भारत से गरीबी समाप्त करनी है, तो न्यूनतम आय प्रदान करने उसमें महती भूमिका अदा कर सकता है। वर्तमान में जब अनेक कल्याणकारी योजनाओं के पश्चात भी गरीबी समाप्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं हो सकी है, ऐसे में
'न्यूनतम आय' के माध्यम से
सरकार की यह जिम्मेदारी होगी
कि वह प्रत्येक व्यक्ति को एक
न्यूनतम आय प्रदान करे, जिससे
वह मूलभूत आवश्यकताओं की
पूर्ति कर सके। सार्वभौमिक आय
अपनाने से गरीबी निवारण की
समस्या भी समाप्त होगी और
पात्रों तक राशि पहुँचाने की
भी समस्या भी समाप्त हो जाएगी।

इतना ही नहीं वर्तमान
में चल रही अनेक योजनाएँ
जैसे - मनरेगा, सार्वजनिक वितरण
प्रणाली इत्यादि समाप्त हो जाएगी,
जिससे इनमें व्याप्त भ्रष्टाचार,
लीकेज की समस्या से निजात
मिलेगा। ~~और~~ सरकार के ~~की~~ प्रशासनिक
तंत्र पर दबाव भी कम
होगा और वह अन्य कल्याणकारी
कार्यों में बेहतर निष्पादन करने
में सक्षम होगा।।

प्रत्येक व्यक्ति की
मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होने
से वह अन्य रचनात्मक कार्यों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में अधिक योगदान दे सकेगा, जिससे देश के आर्थिक विकास में सहायता प्राप्त होगी। बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सकेगी, महिलाओं को उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण प्राप्त होगा। ~~सब~~ समाज के सभी वर्गों का समुचित विकास होगा। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अल्पसंख्यक इत्यादि वर्गों में जिनकी स्थिति वर्तमान में भी अत्यंत दयनीय है, सार्वभौमिक आय आने से उनकी स्थिति में सुधार होगा और सार्वभौमिक आय गांधी जी के 'सर्वोदय के सिद्धांत' को ~~साध्य~~ सफल बनाने में सहायक होगी।

वर्तमान में भारत में कुल GDP का लगभग 58%. आय देश के सर्वाधिक धनी 1%. व्यक्तियों के पास केंद्रित है। यह स्थिति भारत में व्याप्त असमानता को प्रदर्शित करती है। सार्वभौमिक न्यून आय आने से समानता में वृद्धि। इस संबंध में एक विद्वान ने कहा था : कि -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"किसी भी प्रत्येक के पास न तो इतने अधिक संसाधन हो, कि वह किसी व्यक्ति को खरीद सके और न ही कोई व्यक्ति इतना गरीब हो कि वह अपने आपको बेचने को मजबूर हो जाए।"

2 - यूनतम आय की

सार्वभौमिक न्यूनतम आय लागू होने से भारत की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का भी समाधान होगा। नक्सलवाद, आतंकवाद, हत्या, चोरी इत्यादि में गरीबी एक महत्वपूर्ण कारण है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम आय प्रदान की जाएगी, तो निश्चित रूप से व्यक्ति आपराधिक घटनाओं की ओर उन्मुख नहीं होगा और गांधी जी के 'अहिंसा' का सिद्धांत धरातल पर आएगा।

सार्वभौमिक न्यूनतम आय के लागू होने से अनेक लाभ हैं, तो वहीं इससे बड़े पैमाने पर समस्याएँ उत्पन्न होने की संभावना है। वस्तुतः किसी भी लोकतंत्र को तभी सफल माना जा सकता है, जब वह समाज के

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्रदान करने में सक्षम हो। भारत में वर्तमान में सार्वभौमिक न्यूनतम आय लागू करना चुनौतीपूर्ण है, ऐसे में भारत ~~में~~ में गरीबी निवारण, समाज के वंचित वर्गों के समावेशन हेतु जनकल्याणकारी योजनाओं का उत्कृष्टतापूर्वक क्रियान्वयन किया जाए। इसके लिए ई-गवर्नेंस, आधार, इत्यादि को लागू करके योजनाओं का वास्तविक लाभ आम नागरिक को प्रदान किया जाए, जिससे एक समावेशित देश का विकास हो। हाँ, यह अवश्य है कि भविष्य में भारत में 'सार्वभौमिक न्यूनतम आय' की संकल्पना धरातल पर आ सकती है। किंतु जब तक इसे लागू नहीं किया जा रहा, तब तक सरकार को जनकल्याणकारी योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation